९१

कश्यपो मारीचः।पवमानः सोमः। त्रिष्टुप्

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमो मनीषी।

दश स्वसारो अधि सानो अव्येऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ॥ ९.०९१.०१

वक्वा- वाग्विशारदः। वच परिभाषणे। प्रथमः- मुख्यः। मनीषी- मनसः क्रतुभूतः। मनोता- मनांसि यस्मिन्नोतानि प्रोतानि सः। रथ्ये- रथार्हे। आजौ- युद्धे। यथा। तथा। धिया- बुद्ध्या। असर्जि- सृज्यते। सदनानि- ऋतसदनानि। अच्छ- अभिलक्ष्य। अव्ये- रक्षाभूते । सानो- उत्कृष्टे स्थाने। अधि। दश स्वसारः- दशदिग्वर्तिन्य आधारशक्तिधाराः। वह्निम्- वोढारं सोमम्। अजन्ति- प्रेरयन्ति ॥१॥

वीती जनस्य दिव्यस्य कव्यैरधि सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः।

प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभिर्ममृजानोऽविभिर्गोभिरद्भिः॥ ९.०९१.०२

इन्दुः- हृदयस्पर्शी रसः। दिव्यस्य जनस्य- देवानाम्। वीती- अनुभूत्यै। कव्यैः- कविभिः। नहुष्यैः- चित्तवृत्तिबन्धकैः। णह बन्धने। अधि सुवानः- निष्पन्नः। यः। नृभिः- नेतृभिः। मर्त्यैः- मनुष्यैः। अमृतः- अमृतस्वरूपः सन्। अविभिः- रक्षाभूतस्वप्रतीकैः। गोभिः- चिद्रश्मिभिः। अद्भिः- जीवोदकैः। ममृजानः- शोधितो भवति ॥२॥

वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः।

सहस्रमृक्वा पथिभिर्वचोविदध्वस्मभिः सूरो अण्वं वि याति॥ ९.०९१.०३

अंशुः- सोमो रसः। अस्मै- एतस्मै। वृष्णे- वर्षकाय इन्द्राय। वृषा- वर्षकः सन्। रोरुवत्- अशब्दयत्। पवमानः- पुनानः सन्। रुशत्- भ्राजन्। गोः पयः- चिद्रश्मिसारभूतज्ञानम्। ईर्ते-

Dr. Rangani
WEBOLIM

सरति। ईर गतौ। ऋक्वा- मन्त्रयुक्तः। वचोवित्- मन्त्रवित्। सहस्रम्- बहुधा। अध्वस्मभिः- ध्वररहितैः। पथिभिः- शोभनमार्गैः। सूरः- प्रेरकः सन्। अण्वम्- सूक्ष्मताम्। वि- विशेषेण। याति- गच्छति ॥३॥

रुजा दृ॒ळ्हा चि॑द्र॒क्षसः॒ सदां॑सि पुना॒न इ॑न्द ऊर्णुहि॒ वि वाजा॑न्।

वृ॒श्चोप॑रिष्टात्तुज॒ता व॒धेन॒ ये अन्ति॑ दू॒रादु॑पना॒यमे॑षाम्॥ ९.०९१.०४

दृळ्हा- दृढानि। रक्षसः सदांसि- दुष्टानां सदनानि। रुज- नाशय। रुजो भङ्गे। इन्दो- क्लेदनशील रस। पुनानः- पवमानः सन्। वाजान्- हव्यानि। वि- विशेषेण। ऊर्णुहि- आच्छादय। उपरिष्टात्- ऊर्ध्वतः। अन्ति- समीपतः। दूरात्- दूरतः। ये- येऽस्मानागच्छन्ति। एषाम्- एतेषाम्। उपनायम्- नेतारं वृत्रम्। तुजता- हिंसकेन। वधेन- हननसाधनेन। वृश्च- छिन्धि ॥४॥

स प्र॑त्न॒वन्नव्य॑से विश्ववार सू॒क्ताय॑ प॒थः कृ॑णुहि॒ प्राचः॑।

ये दु॒ःषहा॑सो व॒नुषा॑ बृ॒हन्त॒स्ताँस्ते॑ अश्याम पुरुकृत्पुरुक्षो॥ ९.०९१.०५

सः- तादृशस्त्वम्। विश्ववार- सर्ववरणीय। प्रत्नवत्- पूर्ववत्। नव्यसे- अभिनवाय। सूक्ताय- मन्त्राय। प्राचः- प्राचीनान्। पथः- मार्गान्। कृणुहि- कुरु। पुरुकृत्- बहुकर्मयुक्त। पुरुक्षो- बहुमन्त्रयुक्त। ये। दुष्षहासः- दुष्टैर्दुर्वहाः। वनुषा बृहन्तः- संभजनेन महान्तः। तान्। ते- भवतो भोगान्। अश्याम- प्राप्नुयाम ॥५॥

ए॒वा पु॑ना॒नो अ॒पः स्व॑र्ग्गा अ॒स्मभ्यं॑ तो॒का तन॑यानि॒ भूरि॑।

शं नः॒ क्षेत्र॑मु॒रु ज्योतीं॑षि सोम॒ ज्योङ्नः॒ सूर्यं॑ दृ॒शये॑ रिरीहि॥ ९.०९१.०६

एव- इत्थम्। पुनानः- पूयमानः सन्। अपः- जीवोदकानि। स्वः- स्वर्गम्। गाः- चिद्रश्मीन्। भूरि तोका तनयानि- प्रभूतसन्ततीः। अस्मभ्यम्- नः। रिरीहि- प्रापय। सोम- रस। नः-

Dr. Rangaji
WEBOLIM

अस्मदर्थम्। शम्- क्षेमम्। क्षेत्रम्- साधनभूमिकाम्। ज्योतींषि- दीप्तीः। रिरीहि। नः- अस्माकम्। दृशये- दृष्ट्यै। सूर्यं- आत्मसूर्यम्। ज्योक्- चिरम्। कारय ॥६॥

Dr. Ranganji

WEBOLIM